REVIEW OF RESEARCH

"समाज के दर्पणरूपी लोकसाहित्य में लोकसंस्कृति का योगदान ।"

Darshanaben M. Kotecha

M.A., M.Ed., M.Phil.

ISSN: 2249-894X
IMPACT FACTOR : 5.7631(UIF)
UGC APPROVED JOURNAL NO. 48514
VOLUME - 8 | ISSUE - 8 | MAY - 2019

❖ सारांश

""खंखेरी फेंकी दे, वृक्ष पांदडा ना कदी थड,
रुढियो खरती टकी रहे, संस्कृतिरुपी वड ।।""

इस पंक्ति में गुजराती के मूर्धन्य कवि उमाशंकर जोशी ने संस्कृति का वर्णन किया है । संस्कृति मतलब जीवनजीने कीकला । लोगो का वर्तन और उनके विचारो की तराह को संस्कृति के नाम से जाना जाता है । लोकसाहित्य और लोकसंस्कृति एक–दूसरे के पूरक है । लोक–साहित्य पढने–लिखने में एक शब्द है परवस्तुतः यहदो गहरे भावों का गठबंधन है । मानव मन केउदगारो व उसकी सूक्ष्मत्तम अनुभूतियों का सजीव चित्रण हमें लोक–साहित्य में मिलता है ।

लोकसंस्कृति और लोकसाहित्य के बारे में युवापिढी के विचारो को जानने के लीये तीन कॉलेज जिसमें श्रीमती एम॰ एस॰ दवे बी॰एड॰ कॉलेज, अक्षर प्रित फार्मसी कोलेज और परम इन्स्टीटयुट एम॰ बी॰ ए॰ कोलेज में स्वनिर्मित प्रश्नावली के आधार पर अभ्यास किया था, उस–अभ्यास से यह निष्कर्ष निकला कि–अभी भी आज के युवाधन में लोकसंस्कृति और लोकसाहित्य के प्रति जागृतता कम है । कई युवको के विचार से भारतीय संस्कृति से ज्यादा पाश्चात्य संस्कृति अच्छी है । इस समस्या को जडमूल से नष्ट करने के लिए युवापिढी के विचारो में सुधार लाना अति आवश्यक है ।

लोकचेतना तो संस्कृति और साहित्य की परिचालक शक्ति मानी जाती है । किन्तु वर्तमान मशीनी और कम्प्युटरी समाज से लोक चेतना शून्य होती जा रही है । आज जरुरी है कि साहित्य का मूल्यांकन लोकजीवन और लोक संस्कृति की दृष्टि से किया जाना चाहिए । जो लोकसाहित्य लोकजीवन से जुडा होगा वही जीवन्त होगा कुछ विद्वान सभ्यता और संस्कृति को एक ही मानते है और उसके विचार में सभ्यता और संस्कृति का विकास समान रुप से होता है ।

इस तरह समाज के दर्पणरुपी लोकसाहित्य में लोकसंस्कृति का जो योगदान है उसका महत्व आज के नवयुवान समजे और अपनी संस्कृति को अपनाकर गर्व से आगे बढेगे तभी विश्व का सर्वांगीण विकास होगा ।

❖ प्रस्तावना :

लोक साहित्य पढने लिखने में एक शब्द है, पर वह वस्तुतः यह हो गहरे भावों का गठबंधन है, "लोक" और "साहित्य" एक दूसरे के संयुक्त, एक दूसरे में संलिष्ट जहां लोक होगा, वहां उसकी संस्कृति और साहित्य होगा । विश्व में कोई भी ऐसा स्थान नहीं है, जहां लोक हो और वहां उसकी संस्कृति न हो ।

मानव मन के उदगारों व उसकसी सूक्ष्मतम अनुभूतियों का सजीव चित्रण यदि, कही मिलता है तो वह लोक साहित्य में ही मिलता है, यदी हम लोक साहित्य को जीवन का दर्पण कहें तो कोई अतिश्यक्ति नहीं होगी । लोक साहित्य के इस महत्व को समझा जा सकता है कि लोककथा को लोक साहित्य का जनक माना जाता है और लोकगीत को काव्य की जननी लोकसाहित्य में कल्पना प्रधान साहित्य की अपेक्षा लोकशीवज का

यथार्थ सहज की देखने में मिलता है । लोकसाहित्य हम धरतीवासियों का साहित्य है । क्योंकि हम सदैव ही अपनी मिट्टी, जलवायु तथा सांस्कृतिक संवेदना से जुडे रहते है, अतः हमें जो भी उपलब्ध होता है वह गहन अनुभूतियों तथा अभावों के कटु सत्यों पर आधारित होता है, जिसकी छाया में वह पलता और विकसित होता है । इसलिए लोक साहित्य हमारी सभ्यता का संरक्षक भी है ।

❖ समस्या का प्रस्तुतीकरण :

""समाज के दर्पणरुपी लोकसाहित्य में लोकसंस्कृति का योगदान – लोक साहित्य और लोक संस्कृति पर एक अभ्यास ।""

❖ पारिभाषिक शब्दावली :

१. लोकसाहित्य :

साहित्य उसको कहते है जिसमें हित की भावना हो । भाषा के माध्यम से जो अभिव्यक्ति होती है उसी को साहित्य कहते है ।

२. लोकसंस्कृति :

कोई विशिष्ट समय पर विशिष्ट स्थल पर निवास करनेवाले विशिष्ट लोगो को रहन–सहन या रीतभात की शैली को लोक संस्कृति कहते है ।

❖ शोध समस्या के उद्देश्य :

प्रस्तुत संशोधन में निम्नलिखित उद्देश्य सामिल किये गये है ।

१. भारतीय संस्कृति के प्रति नवयुवको को जागृत करना ।
२. साहित्यकारो के द्वारा पाश्चात्य संस्कृति के परिणाम के बारे में जागृत करना ।
३. लोकसाहित्य और लोकसंस्कृति के प्रति युवाधन के मानसिक स्तर में बदलाव लाना ।
४. लोकसाहित्य के प्रति नकारात्मक दृष्टि कोण में परिवर्तन लाना ।
५. लोकसाहित्य के प्रति लोगो की रुचि बढाना ।

❖ शोध समस्या के प्रश्न :

१. समाज के धरोहर रुप लोक साहित्य और लोकसंस्कृति के बारे में युवक के विचारो को जाननना ।
२. लोकसाहित्य और लोक संस्कृति समाज का दर्पण है, इस महत्व को समजाना ।

❖ शोध समस्या का परिसीमन :

समस्या की विस्तृतता को ध्यान में रखते हुए अध्ययन को सरल एवं प्रभावी बनाने के हेतु समस्या क्षेत्र का परिसीमन करना परमावश्यक है, जिससे शोध की उपहियता के साथ वैद्या, विश्वसनीयता भी बढती है अतः संशोधन कर्ता ने भी अध्ययन की प्रकृति एवं सीमा को ध्यान में रखते हुए समस्या के क्षेत्र को निम्नलिखित क्षेत्रों के अंतर्गत समाविष्ट किया है ।

१) शिक्षा की समाजशास्त्रीय आधारशीला
२) शिक्षा का तत्वज्ञान
३) ज्ञान विज्ञान टेक्नोलोजी

❖ शोध के प्रयुक्त विधि :

शैक्षिक अनुसंधान की अनेक वैज्ञानिक विधियाँ है । कोई भी विधि अन्य विधि से श्रेष्ठ नहीं कही जा सकती क्योंकि प्रत्येक विधि की एक महत्वपूर्ण भूमिका हैं ।

प्रस्तुत अध्ययन में सर्वेक्षण विधि प्रयुक्त की गई है ।

❖ जनसंख्या एवं न्यायदर्श :

प्रस्तुत शोध में जनसंख्या के रूप में जामनगर शहर की कॉलेज के छात्रों को चयनित किया गया है ।

प्रस्तुत अनुसंधान में न्यायदर्श के रूप में जामनगर शहर की श्रीमति मीनाक्षीबेन शांतिभाइ दवे कॉलेज ओफ अेज्युकेशन – लाखाबावल (जामनगर) बी॰एड॰ कॉलेज के ५० तालीमार्थी एवं अक्षर प्रित फार्मसी कॉलेज – जामनगर के ५० छात्र और परम इन्स्टीटयुट एम॰बी॰ए॰ कॉलेज के ५० छात्रों को यादच्छिक न्यादर्श विधि के द्वारा चयन किया गया था । जिसे निम्नाकित रूप से सारणीबद्ध किया गया है ।

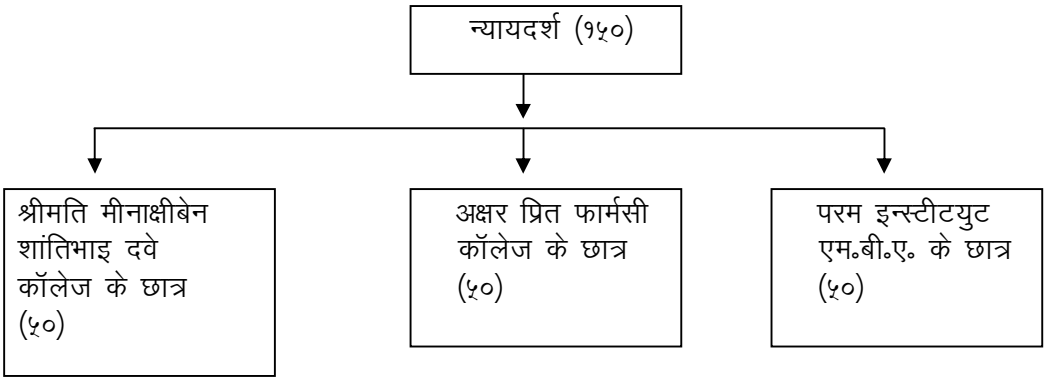

❖ शोध समस्या का औचित्य :

हरेक शोध अध्ययन भिन्न एवं विशेषरूप से महत्वपूर्ण होता है । इस अध्ययन के उद्देश्यो को ध्यान में रखते हुए प्रस्तुत अध्ययन का औचित्य निम्नलिखित है ।

१) लोकसाहित्य और लोकसंस्कृति के बारे में लोगो के विचार जानना ।
२) पाश्चात्य संस्कृति के अनुकरण से होनेवाले नुकसान के युवाधन को जागृत करना ।
३) समाज में लोकसाहित्य का प्रचार–प्रसार बढे ।
४) लोकसाहित्य के प्रति युवाधन की रुचि बढाना ।
५) गुजरात का युवाधन अपनी शक्ति एवं सामर्थ्य को पहचान कर भारतीय संस्कृति को टिकाने में सहयोग करके कदम मिलायेय ।

❖ शोध समस्या की सीमाए :

प्रस्तुत अनुसंधान निम्नलिखित सीमांकनो का स्वीकार करके लिया गया है ।

१) प्रस्तुत अनुसंधान में सिर्फ शहरी क्षेत्र ही समाविष्ट किया गया है ।
२) जामनगर शहर की श्रीमति मिनाक्षीबहन शांतिभाई दवे कॉलेज के ५० तालीमार्थी और अक्षर प्रित फार्मसी कॉलेज के ५० छात्र तथा परम इन्स्टीटयुट के ५० छात्रों को ही न्यायदर्श के रुप में लिया गया था ।
३) दत्तो के संकलन के लिए स्वनिर्मित प्रश्नावली एक ही उपकरण का प्रयोग किया गया था ।

❖ शोध उपकरण :

आवश्यक दत्तों के संकलन हेतु कपिय उपकरणों की आवश्यकता होती है । अतः शोधकर्ता ने स्वनिर्मित उपकरण के रूप में प्रश्नावली का निर्माण किया है ।

❖ दत्तो का संकलन :

प्रस्तुत अनुसंधान में पश्नावली पर "हा" और "ना" दो विकल्प दिये गये थे । उपकरण के प्राप्त को संकलित करके "हा" विकल्प के लिए "१" क्रमांक तथा"ना" विकल्प के लिए "० क्रमांक देकर क्रमांकन लिया गया था ।

परिशिष्ट–२ में संकलित एवं वर्गीकत दत्तो को सारणीबद्ध किया गया है ।

प्रश्नावली पर के प्राप्तांको का विश्लेषण करके प्रतिशत क्रमांक प्राप्त किये गये थे ।

❖ शोध परिणाम :

प्रश्नावली पर प्राप्त प्राप्तांको के विश्लेषण के आधार पर लोकसाहित्य और लोकसंस्कृति अभ्यास निम्नांकित है ।

१) "हा" विकल्प में प्राप्त प्रतिशत क्रमांक ७२.५७३% है ।

२) "ना" विकल्प में प्राप्त प्रतिशत क्रमांक २७.४३% है ।

❖ शोध निष्कर्ष :

परिणाम के आधार पर निम्नांकित निष्कर्ष निकला है ।

१) लोकसाहित्य और लोकसंस्कृति के प्रति लोगो को जागृत करना आवश्यक है ।

२) भारतीय संस्कृति को बढावा देना जरुरी है ।

३) पाश्चात्य संस्कृति के अनुकरण को रोकना हर नागरिक की जिम्मेदारी है, ये जागरुकता लाना आवश्यक है ।

४) लोकसाहित्य का महत्व समजाना आम जनता को अति आवश्यक है ।

❖ शोध फलितार्थ :

१. साहित्यकार के प्रयत्नों में युवाधन को सामिल करके दुषित साहित्य को नाबूदकर सकते है ।

२. पाठयपुस्तक में ऐसे विषय को रखकर युवाधन को इसका महत्व समाजकर जागृत कर सकते है ।

३. पाश्चात्य संस्कृति के अनुकरण को रोकना हर नागरिक की जिम्मेदारी है, ये जागरुकता लाना आवश्यक है ।

४. लोकसाहित्य का महत्वसमजाना आम जनता को अति आवश्यक है ।

❖ शोध फलितार्थ :

१. साहित्यकार के प्रयत्नों में युवाधन को सामलि करके दुषित साहित्य को नाबूद कर सकते है ।

२. पाठयपुस्तक में ऐसे विषय को रखकर युवाधन को इसका महत्व समजाकर जागृत कर सकते है ।

३. पाश्चात्य संस्कृति के अनुकरण से होने वाले माध्यमों के जरिये परिणामो से अवगत कराके हमारे देश की लोकसंस्कृति को बढावा हो सकते हैं ।

संदर्भ सूचि :

१. M. Hilaria Soundari – Right to be Born : A study on Femicide, EADI General Conference, Geneve 24-28 June 2008.

२. डॉ॰ डी॰ अे॰ उचाट – "माहिती पर संशोधन व्यवहारो", प्रथम आवृति, सौराष्ट्र युनिवर्सिटी, शिक्षणविभाग, राजकोट, मार्च–२००४॰

३. रावल नटुभाई और अन्य – (२००६) हिन्दी विषयवस्तु, नीरव प्रकाशन – अहमदावाद ।

४. डॉ॰ अनिरुद्धसिंह गोहिल – "संवाद–कलावृंद" प्रथम आवृत्ति, गुजराती भाषा–साहित्य विभाग, जामनगर॰ पृष्ठ नं॰ ४५, वर्ष–२००६–१०॰

५. डो॰ दीपिका भद्रेश शाह – शैक्षणिक संशोधन प्रथम आवृत्ति, दक्षिण गुजरात युनिवर्सिटी, शिक्षण विभाग, सूरत २००४॰

६. डॉ॰ नागेन्द्र – हिन्दी साहित्य का इतिहास, मयूर पेपर बैक्स, नौएडा ।

Darshanaben M. Kotecha
M.A., M.Ed., M.Phil.